


# डॉ. भावना एन. सावलिया
## प्रोफेसर- आर्ट्स कॉलेज मोडासा, गुजरात


## लघुकथा

### ईमानदारी

फोन की घंटी बजी| असिस्टेंट रजिस्ट्रार ने फाइल में नजर हटाकर फोन उठाया :
"हेलो"
सामने से आवाज़ आई
"नमस्कार सर , मैं महात्मा गाँधी कॉलेज से डॉ.सुनैना पटेल बोल रही हूँ"
"जी बोलिए"
"सर, शैक्षिक मान्यता की मेरी फाइल आपके यहाँ पन्द्रह दिन पहले भेजी गई है, इसके बारे में मुझे पूछना है कि शैक्षिक मान्यता मिल गई है ?"
"एक मिनट मैं देखकर बताता हूँ"
"जी सर"
उन्होंने हेड क्लर्क को बुलाकर पूछा - " डॉ. सुनैना की फाइल आई है?"
हेड क्लर्क -" हाँ जी साहब|"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार - "कब आई है?"
हेड क्लर्क- "पंद्रह दिन हो गए |"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार - " अभी तक मेरे टेबुल पर क्यों नहीं आई?"
हेड क्लर्क - " साहब इसमें रुपए 500 का डी. डी. नहीं लगाया है|"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार - "मैडम आपने ५०० (पाँच सौ ) रुपए का डी.डी. नहीं लगाया है, इसलिए काम नहीं हुआ है | कोई बात नहीं मैं लगा देता हूँ|"
"सर मैंने लगाया है , शायद अन्य कागजों में अटक गया हो, मैं उसकी फोटो कॉपी आपको वोट्सऐप कर दूँ ?"
"रुकिए मैं फिर से देखता हूँ|"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार हेड क्लर्क को बुलाया -- "मेरे पास डॉ. सुनैना की फाइल लेकर आओ|"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार ने फाइल में डी.. डी. चिपका हुआ देखकर क्लर्क को कहा - "यह क्या है?" ईमानदारी से काम करने की आदत डालो| किसी के भविष्य के साथ खिलवाड़ मत करो, समझे!"
असिस्टेंट रजिस्ट्रार ने सुनैना को फोन किया -
- "सोरी मैडम, आपका डी.डी. एप्लीकेशन के पीछे लगा हुआ था, सो मुझे दिखाई नहीं दिया| कल आपका काम हो जाएगा|" आदरणीय साहब आपका मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ |"
"अरे नहीं नहीं, यह तो मेरा फ़र्ज़ है..."

### मनौती

वैभव की शल्यक्रिया के दौरान दादा जी ने इक्कीस किलो घी मंदिर में चढ़ाने की मनौती रखी थी| एक सप्ताह बाद इक्कीस किलो घी घर में इकट्ठा हो गया था|
बेटी श्वेता ने कहा : "पापा मेरी बात आपको योग्य लगे तो कहूँ!"
पापा - "कहो श्वेता "
श्वेता -"मंदिरों में तो बहुत लोगों के प्रसाद आते हैं | हमारा यह प्रसाद खेतों में, सड़कों पर और अन्य स्थानों पर काम करने वाले मजदूरों को क्यों न बाँट दिये जाएँ! भगवान भी बहुत खुश होंगे और हमारा प्रसाद भूखों का चूल्हा जलाएगा | हमारे कुलदीपक की तरह निर्धनों के कुलदीपक भी खुश होंगे|"
दादा थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गए| बाद में अपने बेटे को कहा : "चलो दिव्येश बेटा हम दोनों मजदूरों को भगवान का प्रसाद बाँट के आते हैं|"
दादा ने खुशी से प्रसाद बाँटते समय कहा - "दिव्येश मुझे मजदूरों के बच्चों में मेरा पोता वैभव नज़र आता है |"